

વेड्ही आश्रमनी रथनात्मक प्रवृत्ति

प्र. डॉ. हितेन्द्रसिंह वाय. भरवासिया

आर्ट्स एन्ड कॉमर्स कॉलेज, व्यारा,

जि. तापी, ३८४५५०

भारतमां ईस्ट इन्डिया कंपनीना शासनकालाथी शहुँ करीने आजगदी सुधाना समयगाणा सुधी अग्रेजोंनो आशय साम्राज्य विस्तार अने आर्थिक वाभ मेजववानो हतो. कंपनीना शासन दरभ्यान लिंडनी प्रजा ने विशेषतः आर्थिक अन्याय सहन करवा पडया हता जेनी सामे लिंडनी प्रजमां उग्र असंतोष जेवा मणतो हतो. परिषाम स्वरूप ओगण्डोसमी सदीना प्रारंभथी अंग्रेज शासन विरुद्ध बणवाओ शहुँ थया. ई.स. १८१५ मां बेरेलीअे, ई.स. १८३१-३२ मां बैलालिअे, ई.स. १८४८ना डंगण्डाओ तथा ई.स. १८५४-५५ मां संचाल जातिए अंग्रेजे विरुद्ध लथियारो उडाव्या हता.^१ जोके आ अवाज के असंतोष खुब ज सिमित हतो. भारतमां राष्ट्रीय चेतनानो यथार्थ विकास १८ मी सदीना मध्यभागथी वधु उग्र अने संगठित थयो हतो ऐवु जाणवा मणे छे. ई.स. १८५७ नी कातिना रुपमां भारते सौ प्रथमवार राष्ट्रीय भावनानो अनुभव कर्यो. आ कातिथी लोकोना हृदयमां राष्ट्रीय भावनानो संचार थयो.^२ समय जता २० मी सदीना प्रारंभिक वर्षोमां लिंडनी राजनीतिमां महात्मा गांधीना प्रवेशे लोकहृदयमां विकसेला राष्ट्रीय भावनाने वधु वेग अने योग्य ढिशा आपो ऐवु घोक्स कडी शकाय.

सौ प्रथम गांधीज्ञे अंग्रेजोना अत्याचार, औरजुलम, शोषण अने अन्यायी नीतिने लइने अंग्रेजे सामे असहकारनु अलिंसक शस्त्र उगमवा पोतानो विचार ई.स. १८२० मां व्यक्त कर्यो हतो. सप्टेंबर १८२० मां कलकत्ता खाते लावा लजपतरायना अध्यक्ष पद डेंग मणेली भास्तीय राष्ट्रीय क्रिंग्रेसनी परिषट्टे असहकारनी लडत चलाववा ढारव पसार कर्यो हतो.^३ आ असहकारना कर्थकमां परटेशी मालना बलिष्ठरनु अने जादीनां प्रचारनो पशा समावेश थतो हतो. जो पोते आपेला आ कार्यकमने लोको दारा स्वीकारवामां आवे तो एक वर्षमां स्वराज लाववाना वात गांधीज्ञे ई.स. १८२१ नी नागपुर खाते मणेली अभिल भारतीय क्रिंग्रेस समितिना परिषदमां करी.^४ अंग्रेजे सामे आंदोलनोनी साथे साथे रथनात्मक प्रवृत्तिने पशा आगण वधारवा गांधीज्ञ मक्कम हता. रथनात्मक प्रवृत्तिना प्रगार अने प्रसारथी स्वराज्य प्राप्तिनी अलिंसक लडतने वेग आपवानो तेमणो प्रमास हतो. आनी साथे गांधीज्ञ रेटियानी प्रवृत्तिने पशा तेज बनाववा मांगता हता. तेथी तेमणे आ परिषदमां देशवरभान्मां २० लाख रॅटिय गुंजता करवाना ईच्छा व्यक्त हती.

थोडा समय माटे राष्ट्रीय आंदोलन स्थिति थतां सरकारे सत्याग्रहीओ उपर दमन गुजरातवानु चालु राख्यु अने १३ मार्च १८२२ ना रेज गांधीज्ञे केंद्र करवामां आव्या.^५ समग्र देशमां गांधीज्ञना आ विचारने खुब सारो प्रतिसाद भयो जेमां गुजरातना जुदा जुदा भापोनो समावेश थयो हतो. विशेष करीने दक्षिण गुजरातना लोको गांधीज्ञना स्वराज अने रथनात्मक प्रवृत्तिना विचारेथी खुब ज प्रभावित थया हता. अने तेथी बारेली तालुकाना लोकोज्ञे गांधीज्ञना सरदारी नाचे कायदाना सविनय भंगनी लडत उपाडवानी तेयारी करी वस्त्रनी जरुरियात भाबते स्वावलंबी बनवानी प्रतिक्षा लीधी हती. तेने परिषूर्ष करवा गांधीज्ञ ज्यारे जेवामां गया त्यारे आ जवाबदारी तेमणे मगनलाल गांधी (सत्याग्रहना कार्यक्रम अने बापुभक्त पुरुष) ने सोंपो.^६ तेमणे एकपश क्षानो विलंब कर्या वगर बारेली जवानु अने उपरोक्त प्रतिक्षाना पालन अर्थे जे जे करतु आवश्यक ज्याय ते बधु ज करवानु नक्की कर्यु. साबरमती आश्रमनी जवाबदारी इगनलाल गांधीने सोंपो तेझो बारेली पडोयी गया.^७ अने त्यां आश्रममां वशाट तालीम केन्द्र घोलवामां आव्यु. रेटिया, पांजां, साण, वगेरे संराजम बनाववानु काम पशा त्यां ज शहुँ करी देवामां आव्यु. आ रथनात्मक कर्यो माटे मगनलाल गांधीज्ञे साबरमती आश्रममांथी यूनीवाल सांकेतिक भेटाने पशा साथे राख्या हता.

बारेली स्वराज आश्रममां यूनीभाईन प्रथम वशाट वर्ग चलाववानु सोंपवामां आव्यु हतु. गांधीज्ञना रेटियानो संटेशो रानीपरज लोकेमा पशा खुब आवकार पाभ्यो हतो. तेना परिषाम स्वरूप घाणी जूयायेथी रेटिया पांजां शीभववानी मांगणी बारेली आश्रममां आववा लागी. दक्षिण गुजरातमां छिक छेवाडाना विस्तारमां आवेल चानीपरज विस्तारमां पशा गांधीज्ञना रथनात्मक प्रवृत्तिना विचारे विशेष आवकार पाम्या. तथा लोको पशा खुब प्रभावित थया. बारेली नाचक आवेल वेड्ही पशा आवायी भाकात न रह्यु. वेड्ही गामना आगेवान ज्वलाभाई बाबरभाई चौधरी अने गोमज्जभाई लालभाई चौधरी वेड्ही गाममां रेटिया दाखल करवानी मांगणी लई बारेली आश्रममां गया हता अने ए मांगणीना एकभाग रुपे यूनीभाई भेटाने पसंद करवामां आव्या. तेमणे वेड्हीमां रेटिया शीभवनारायोनी वस्ती ऐय त्यां रहेवानु पसंद कर्यु. तेवु स्थान वेड्हीनु खणियु हतु. त्यां ज्वलाभाई बाबरभाई चौधरीना घरना खुक्कामां यूनीभाई भेटानो पहेलो मुकाम तारीख १३-५-१८२४ ना हिने थयो.^८ अने ते शिते वेड्ही आश्रम केन्द्र तशीके ई.स. १८२४ मां असितवामां आव्यो.^९

वेड्ही आश्रमनी रथनात्मक प्रवृत्तिओ :-

वेड्ही गाम सुरत जिल्लाना वालोड तालुकामां आवेलु छे. लालमां ते नवरथीत तापी ज्वलाना वालोड तालुकामां समाविष्ट छे. १८२४ मां वेड्हीमां स्थापवामां आवेल स्वराज आश्रमने लई आ गाम धधुं ज प्रयक्तित बन्यु छे. आ विस्तार जंगलोथी घेसेवेल छे. अहानी प्रजा वर्षोथी आर्थिक, शैक्षणिक तथा राजकीय शीते पघात हती. आ प्रजा रानमां वसती डोय त्यां रहेवानु पसंद कर्यु. तेवु स्थान वेड्हीनु खणियु हतु. त्यां ज्वलाभाई बाबरभाई चौधरीना घरना खुक्कामां यूनीभाई भेटानो पहेलो मुकाम तारीख १३-५-१८२४ ना हिने थयो.^{१०} अने ते शिते वेड्ही आश्रम केन्द्र तशीके ई.स.

गांधीज्ञना आगेवाना डेंग भारतीय राष्ट्रीय क्रिंग्रेस दारा चालेल असहकार अने सविनय क्रानुन भंगनी लडत तथा अन्य राष्ट्रीय आंदोलनो साथे आ आश्रमने निकटनो संबंध रह्यो हतो. तथा आ आश्रम द्वारा अनेक रथनात्मक प्रवृत्ति पशा लाय घरवामां आवी हती ऐवु जाणवा मणे छे.